इकाई 12 लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी

12.2.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

12.2.2 उन्नीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकी कहानी

12.2.3 बीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकन कहानी

12.2.4 समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी

12.3 अफ्रीकी देशों में कहानी

12.3.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

12.3.2 अफ्रीकी उपनिवेशों में कहानी

12.3.3 उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी

12.3.4 प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार

12.4 सारांश

अभ्यास

12.0 उद्देश्य

यह एम. ए. हिंदी के द्वितीय वर्ष के कहानी से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबद्ध तीसरे खण्ड की बारहवीं इकाई है। इस इकाई में हम लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी विधा के विकास पर चर्चा करेंगे। लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों ने साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी गुलामी के शोषण, अत्याचार और अनाचार को पूरी उत्कटता में भोगा है। इन देशों में कहानी उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष का एक महत्वपूर्ण उपकरण बनकर उभरी। एक उपनिवेश के रूप में इन देशों का यथार्थ और उत्तर–औपनिवेशिक चेतना से लैस मुकम्मल कल्पनादृष्टि इन कहानियों में मिलती है। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी के विकास को समझ सकेंगे/सकेंगी।

12.1 प्रस्तावना

लैटिन अमेरिकी कथा–साहित्य में दक्षिण अमेरिका महाद्वीप और कैरिबियन द्वीप समूह की विभिन्न देशज भाषाओं के साथ–साथ स्पहानी, पुर्तगाली आदि भाषाओं में रची गयीं कहानियाँ और उपन्यास शामिल हैं। इन देशों के कथा साहित्य को बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में विशेष ख्याति तब मिली जब जादुई यथार्थवाद नामक शैली को, जो यहाँ के कथा–साहित्य की मौलिक उपलब्धि रही, विश्व–स्तर पर प्रतिष्ठा मिली। अफ्रीकी देशों का कथा–साहित्य इस अर्थ में विशिष्ट है कि यहाँ कला और अंतर्वस्तु के विभाजन की

मुखालफत करते हुए यूरोपियन कथा–दृष्टि के विपरीत कलात्मकता का प्रयोग महत्वपूर्ण सत्यों और सूचनाओं की सामाजिक संप्रेषणीयता के लिये किया गया है। इस दृष्टि से लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों की कहानियाँ विशिष्ट हैं।

12.2 लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी

12.2.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान लैटिन अमेरिकी देशों के वह प्राचीन आख्यान हैं, जो वहाँ के देशज निवासियों द्वारा रचे गये। ये अधिकांशतः मौखिक हैं। हालाँकि एजटेक और माया सभ्यता के लोगों ने कुछ असंगठित पांडुलिपियाँ भी छोड़ी हैं। यह मौखिक आख्यान मिथकीय और धार्मिक विश्वासों पर आधारित थे। 'पोपोल वूह' जैसे वृत्तांत तो यूरोपीय सम्राज्यवादियों के आगमन तक रचे जाते रहे। मौखिक वृत्तांतों की यह परंपरा लैटिन अमेरिकी देशों में आज तक जीवित है और इसने इन देशों में कहानी के विकास को काफी गहराई से प्रभावित किया है। पेरू की केशावा–भाषी और ग्वाटेमाला के कीश आख्यान इसका उदाहरण हैं।

12.2.2 उन्नीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकी कहानी

लैटिन अमेरिकी देशों में एक संगठित विधा के रूप में कहानी का विकास उन्नीसवी सदी में ही संभव हो पाया। हालाँकि इसकी शुरुआत यूरोपीय साम्राज्यवादियों के आगमन से ही हो चुकी थी। कोलंबस और बर्नाल दिआज देल कास्तीलो जैसे आरंभिक यूरोपीय खोजी और विजेता अपनी जीतों और अनुभवों को आधार बनाकर कलात्मक वृत्तांत रचने में सफल रहे। इसके अलावा इन साम्राज्यवादियों द्वारा देशज जनता का शोषण और गुलामी विवाद का विषय बने और उपनिवेशवादियों द्वारा प्रचारित तर्कों की नैतिकता को कठघरे में खड़ा किया गया। बार्तोलोम दे लास कासास का 'इंडीज की तबाही का संक्षिप्त विवरण' उपनिवेशवादी नैतिकता के खोखलेपन को उजागर करने वाले आरंभिक आख्यानों में से एक है। मेस्तीजो और अन्य देशज लेखकों ने भी औपनिवेशिक दृष्टिकोणों को चुनौती देने वाले वृत्तांत लिखे। इनमें एल इंका गार्सिलासो दे ला वेगा और ग्वामान पोमा द्वारा रचित स्पाहानी विजेताओं के अत्याचारों का वर्णन करने वाले वृत्तांत प्रमुख हैं। अठ्ठारहवीं सदी के अंत और उन्नीसवीं सदी की शुरूआत से लैटिन अमेरिकी देशों के कथा–साहित्य को मुकम्मल कलात्मक आधार मिलना आरंभ हुआ और खोसे जुआक्विन फर्नांदेज दे लिजार्दी जैसे कथा–लेखकों का आविर्भाव हुआ। साईमन बोलिवार और आंद्रेस बेलो जैसे स्वतंत्रता–सेनानी भी कथा–लेखक थे। उन्नीसवीं सदी में रूमानी और प्रकृतवादी परंपरा में राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाने वाली कहानियाँ लिखी गयीं। इन कहानियों में औपनिवेशिक दृष्टिकोणों को चुनौती देते हुए देशज अस्मिता और उससे जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया गया। अर्जेंटीना के डॉमिंगो सार्मीतो, कोलंबिया के खोर्खे इसहाक, इक्वाडोर के जुआन ल्योन मेरा, ब्राजील के यूक्लिदेस दा कुन्हा आदि इस दौर के प्रमुख कहानीकार थे।

12.2.3 बीसवीं सदी की लैटिन अमेरिकन कहानी

बीसवीं सदी में लैटिन अमेरिकी कहानी कला को अर्जेंटीना के कहानीकार खोर्खे लुई बोर्खेस ने नया आयाम दिया। उन्होंने कहानी में एक नयी शैली का सूत्रपात किया जिसे दार्शनिक लघुकथा का नाम दिया गया। बोर्खेस बीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण

कहानीकार के रूप में उभरे जिन्होंने न सिर्फ लैटिन अमेरिकी देशों की आने वाली कहानीकार पीढ़ी को बल्कि पूरी दुनिया के कहानीकारों को गहराई से प्रभावित किया। जादुई यथार्थवाद का, जिसके लिये लैटिन अमेरिकी कहानीकारों को विश्व भर में पहचाना जाता है, सबसे पहले पूरी कुशलता से अपनी कहानियों में प्रयोग बोर्खेस ने ही किया। ठीक इसी समय रॉबर्तो आर्ल्त ने शहरीकरण और प्रवासीकरण को केंद्र बनाकर महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। मकादो दे आसिस ब्राजील के महत्वपूर्ण कहानीकार हुए, जिन्होंने जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों पर तथा गहन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से युक्त कहानियाँ लिखीं। मैक्सिको की क्राँति के दौरान मारियानो एजुआला जैसे कहानीकारों नें क्राँति, सामाजिक यथार्थवाद और बदलते परिदृश्य को आधार बनाकर एक अलग किस्म की कहानी परंपरा की नींव डाली जो लंबे अर्से तक मैक्सिको की कहानीकला को प्रभावित करती रही। 1940 के दशक में क्यूबा के कहानीकार अलेजो कार्पेंतिएर ने 'लो रिएल माराविलोसो' नामक संज्ञा को गढ़ा और मैक्सिको के जुआन रुल्फो और ग्वाटेमाला के मिगुल एंजेल आस्तूरिआस के साथ 'जादुई यथार्थवाद' की शैली को लैटिन अमेरिकी देशों की कहानियों की मुख्य पहचान के रूप में प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात लैटिन अमेरिकी देशों नें आर्थिक समृद्धि और आत्म–विश्वास की नयी राहों पर कदम रखा। इस दौर के लैटिन अमेरिकी साहित्य में एक नया उभार आया जिसे 'बूम' की संज्ञा दी गयी। अब कहानी में लैटिन अमेरिकी संस्कृति की साधारणीकृत धारणाओं को चुनौती दी जाने लगी, भाषा के स्तर पर नए–नए प्रयोग होने लगे और विभिन्न प्रकार की शैलियों को मिलाकर नई राहों का अन्वेषण किया जाने लगा। वास्तव में यह लैटिन अमेरिकी देशों की कहानी में प्रयोगवाद की शुरुआत थी। पारंपरिक आख्यानों से बाहर आकर, एकरेखीयता से विद्रोह कर नयी कथा संरचनाएं अस्तित्व में आईं। विलियम फॉकनर, जेम्स ज्वायस और वर्जीनिया वूल्फ जैसे उत्तर अमेरिकी और यूरोपीय लेखकों से प्रभावित होकर अब लैटिन अमेरिकी कहानीकारों ने नये विषयों को कहानी में प्रतिष्ठित करने का जोखिम उठाया। इन कहानीकारों में अर्जेंटीनी लेखक जूलिओ कोर्तजार का नाम उल्लेखनीय है। इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं–'बेस्तिआरियो'(1951), 'फिनाल देल जुएगो'(1956), 'लास अर्मास सीक्रेतास'(1959) आदि। कोलम्बिया के गैबरियल गार्शिया मार्खेज, जिन्हें लैटिन अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध कहानीकार होने का गौरव प्राप्त है, नें इसी दौर में लोकप्रियता अर्जित की। 'जादुई यथार्थवाद' अब लैटिन अमेरिकी कहानी की पहचान बन चुका था। पेरू के लेखक मारियो वर्गास योसा की कहानियाँ 'जादुई यथार्थवाद' के ढाँचे में फिट नहीं बैठती, लेकिन लोकप्रियता में वह किसी भी लैटिन अमेरिकी कहानीकार से पीछे नहीं हैं। उनका प्रमुख संग्रह है–'लोस येफेस'। योसा की ही तरह मैक्सिको के कार्लोस युंतेस एक प्रसिद्ध कहानीकार हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं–'लॉस दिआस एन्मासकरादोस', 'एगुआ क्वेमादा' आदि। 'बूम' के दौरान कहानीकला के सर्वोच्च शिखर को छुआ पैरागुए के कहानीकार आगस्तो रोआ बास्तोस ने। उनका प्रमुख कहानी संग्रह है–'एल त्रुएनो एंत्रे लास होजास' जिसमें पैरागुए में सत्ताधारियों के शोषण और सामाजिक संघर्ष का यथार्थ चित्रण हुआ है। चिली के खोसे दोनोसो ने तानाशाहों के खूनी शोषण की पोल खोलने वाली मारक कहानियाँ लिखीं। ग्वातेमाला के आगस्तो मोंतेर्रोसो नें कहानी में अपने देश में तानाशाही शासन तले पिसती जनता के संघर्षों का शिद्दत से चित्रण किया। 'बूम' के अंतर्गत लिखी गयी कहानियों की मुख्य विशेषता यह रही कि जब पूरी दुनिया में लैटिन अमेरिकी देशों की आर्थिक समृद्धि और उसकी विकासमान अर्थव्यवस्था का गुणगान किया जा रहा था तब इन कहानियों ने शोषण के जाल में फंसी लैटिन अमेरिकी देशों की जनता के संघर्षों को स्वर देकर आर्थिक समृद्धि के खोखले दावों की असलियत को उजागर किया।

12.2.4 समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी

'बूम' के उपरांत लैटिन अमेरिकी कहानी में महत्वपूर्ण मोड़ आया। चिली के अल्बर्तो फुग्युएत जैसे लेखकों ने लैटिन अमेरिकी कहानी में 'जादुई यथार्थवाद' की प्रमुखता को खारिज किया और जीवन की विडंबनाओं और विसंगतियों को चित्रित करने के भिन्न–भिन्न तरीकों का इस्तेमाल किया।उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– 'सोब्रेदोसिस' और 'कॉर्तोस'। अब समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानी में विविधता और जीवंतता की ऐसी अभिव्यक्ति हुई है कि उसे किसी एक आंदोलन या एक शैली में समेटा नहीं जा सकता। अन्य प्रमुख समकालीन लैटिन अमेरिकी कहानीकार हैं–पाउलो कोहेलो(ब्राजील), इजाबेल एलेंदे(चिली), दियामेला एल्तित(चिली), जिआन्निया ब्रास्की(प्यूर्तो रिको), लुइसा वालेंजुएला(अर्जेंतीना), रिकार्दो पिगलिया(अर्जेंतीना), खोर्खे मार्चांत लाजकानो(चिली), एदमुंदो पाज सोल्दान(बोलीविया), विक्तोर मोंतोया(बोलीविया), रोबार्तो बोलानो(चिली), सीजर आयेरा(अर्जेंतीना), कार्लोस मोन्सिवायस(मैक्सिको), पेद्रो लेमेबेल(चिली) आदि।

12.3 अफ्रीकी देशों में कहानी

अफ्रीकी देशों की कहानियों की मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ शिल्प और कथ्य के पार्थक्य को अस्वीकार करके कहानी को सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में पहचाना गया। कहानी की लिखित परंपरा के साथ–साथ वाचिक परंपरा को भी बराबरी से महत्व दिया गया। अफ्रीकी कहानीकारों ने सौंदर्य को सामाजिक सत्य की प्राप्ति की कारगर अभिव्यक्ति के लिये आवश्यक माना। इस तरह अफ्रीकी कहानी के संदर्भ में सत्य और सौंदर्य के बीच किसी भी तरह के विरोधाभास या अलगाव की बात करना बेमानी है।

12.3.1 प्राक्–औपनिवेशिक आख्यान

प्राक्–औपनिवेशिक अफ्रीका में कहानी की मौखिक परंपरा में मिथकीय और ऐतिहासिक तत्वों का इस्तेमाल हुआ है। इसमें ऐंद्रजालिक आख्यान भी शामिल हैं। अफ्रीकी कथावाचक अपनी कहानी को आगे बढ़ाने के लिये पाठकों की प्रतिक्रिया को काफी महत्व देता है। मौखिक कहानियों की सांगीतिक प्रस्तुति आम बात है। पश्चिमी अफ्रीका की मौखिक कहानियाँ मालि भाषा में रची गयीं। इथोपिया में केबरा नेगास्त की कहानियाँ गीज लिपि में रची गयीं। घाना के आशंति लोगों के बीच ऐसी लोक–कथाएँ प्रचिलित हैं जिनके नायक पशु हैं और वे अपने से ताकतवर समझी जाने वाली सत्ताओं को बुद्धिमत्ता से पराजित करते हैं। नाईजीरिया के योरूबा लोक साहित्य में इजापा नामक कछुए की तथा केंद्रीय और पूर्वी क्षेत्र के लोक साहित्य में सुंगुरा नामक खरगोश की कहानी काफी लोकप्रिय है। स्वाहिली तट, सहेल, टिंबकटू आदि क्षेत्रों में यूला और सोंघाई जैसी देशज भाषाओं में और अरबी भाषा में कई लोककथायें प्रचलित हैं जो अफ्रीकी कहानी की मौखिक परंपरा को समृद्ध करती हैं।

12.3.2 अफ्रीकी उपनिवेशों में कहानी

अफ्रीकी देशों में औपनिवेशिक शासन की स्थापना के उपरांत कहानीकारों का परिचय पश्चिम की अंग्रेजी, फ्रेंच व अन्य भाषाओं से हुआ और देशज भाषाओं की वाचिक कहानी परंपरा के समानांतर लिखित कहानी जब अस्तित्व में आई तब अफ्रीकी कहानीकारों ने पश्चिमी भाषाओं में कहानी लिखने की शुरूआत की । इन भाषाओं में लिखी गयी

कहानियाँ औपनिवेशिकता के दौर में विश्वप्रसिद्ध हुईं। जैसे–जैसे औपनिवेशिकता के खिलाफ जनसंघर्ष तेज होने लगा, अफ्रीकी कहानी में भी स्वतंत्रता, मुक्ति और 'नेग्रीट्यूड' जैसे विषय प्रमुखता से प्रतिष्ठित होने लगे। अब कहानी स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण साधन बन चुकी थी। इस दौर के प्रमुख कहानीकारों में चिनुआ अचेबे और न्गुगी वो थ्योंगो का नाम उल्लेखनीय है। अफ्रीकी कहानीकारों ने तानाशाही और शोषण के खिलाफ अपनी जनता के पक्ष में लड़ते हुए अपनी जान तक गंवाई है। नाईजीरिया के लेखक केन सारो–विवा को सैन्य तानाशाहों ने फाँसी पर चढ़ा दिया था। उनकी कहानी 'अफ्रीका किल्स हर सन' बहुत ही मार्मिक है जो देश के सपूतों के प्रति तानाशाही शासन के क्रूर बर्ताव और अत्याचारों का बेबाकी से चित्रण करती है।

12.3.3 उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी

ज़्यादातर अफ्रीकी देशों ने 1960 और 70 के दशक में आजादी प्राप्त की। आजादी के बाद की अफ्रीकी कहानी ने, कला और साहित्य में प्रचलित औपनिवेशिक दृष्टि को चुनौती देकर देशज जनता की अस्मिता और आकांक्षा को प्रतिष्ठित किया। कहानी में एक खास मोड़ यह आया कि अंग्रेजी, फ्रेंच और पुर्तगाली जैसी पश्चिमी भाषाओं को पूर्णतया स्वदेशी रंग में इस तरह ढाला गया कि यह भाषाएं पूर्णतया अफ्रीकी भाषाएँ बन गयीं। अब इन्हें अफ्रीकी–अंग्रेजी, अफ्रीकी–फ्रेंच और अफ्रीकी–पुर्तगाली भाषा कहना ज़रूरी हो गया ताकि पश्चिमी भाषाओं से इनका अंतर स्पष्ट हो सके। साथ ही साथ देशज भाषाओं की संभावनाओं का विस्तार इस तरह किया गया कि वे मौखिक परंपरा की सीमारेखा को तोड़कर कहानी की लिखित सत्ता की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन बनीं। केन्या के कहानीकार न्गुगी वा थ्योंगो ने अंग्रेजी के साथ साथ देशज गिकुयू भाषा में भी कई महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। इस तरह उत्तर–औपनिवेशिक और समकालीन अफ्रीकी कहानी भाषा, शिल्प और कथ्य के स्तर पर पूर्णतया स्वदेशी है तथा स्थानीयता की खुशबू और रंग से सराबोर है।

12.3.4 प्रमुख अफ्रीकी कहानीकार

पीटर अब्राहम्स दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेजी भाषी कहानीकार हैं। उनकी कहानियाँ राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों से जूझती हैं और नस्लवादी शोषण के क्रूर और अमानवीय चेहरे को उजागर करती हैं। उनका प्रमुख कहानी–संग्रह है–'डार्क टेस्टामेंट'। चिनुआ अचेबे नाईजीरिया के लेखक हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। अचेबे की कहानियाँ इग्बो समाज की परंपराओं, ईसाई प्रभावों तथा पश्चिम और पारंपरिक मूल्यों के टकराव को शिद्दत से दर्ज करती हैं। उनकी कहानियों की शैली पर इग्बो समाज की मौखिक परंपराओं, आख्यानों, लोकोक्तियों, कहावतों और कहन–कला का जबर्दस्त प्रभाव है। उनके कहानी संग्रह हैं–'मैरिज इज ए प्राईवेट अफेयर', 'डेड मेंस पाथ', 'द सैक्रिफीशियल एग एंड अदर स्टोरीज', 'सिविल पीस', 'द वोटर' आदि। चिमामंदा न्गोजी अदीची नाईजीरिया की आंग्ल–भाषी लेखिका हैं। उन्हें अफ्रीकी कथा–साहित्य के नये चेहरे के रूप में विश्व–स्तर पर ख्याति मिली है। उनका प्रमुख कहानी संग्रह है–'द थिंग अराउंड योर नेक'। मोहम्मद नसीहू अली घाना के लेखक हैं। अंग्रेजी में उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'द प्रॉफेट आव जॉगो स्ट्रीट'। एलिची अमादी(नाईजीरिया) की अंग्रेजी कहानियाँ अफ्रीकी ग्रामीण जीवन की परंपराओं, आस्थाओं, धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं का विश्वसनीय चित्रण करती हैं। घाना के कहानीकार अयी क्वेयी अर्माह ने अंग्रेजी में कई प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। ये कहानियाँ निर्वासित लोगों द्वारा राजनीतिक

उथल–पुथल को भोग रही अपनी मातृभूमि को समझने और जानने की जद्दोजहद को सामने लाती हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द बाल'। सेफी अत्ता नाईजीरिया की लेखिका हैं जिन्होंने स्त्री नजरिये से अपने समाज के रीति–रवाजों के साथ–साथ घरेलू हिंसा का भी चित्रण किया है। उनका अँग्रेजी कहानी–संग्रह 'न्यूज फ्रॉम होम' विश्वप्रसिद्ध है। आयेशा अत्ताह घाना की अग्रेजी–भाषी लेखिका हैं जिनकी कहानी 'तमेल ब्लूज' काफी चर्चित हुई। मारियामा बा सेनेगल की फ्रेंच भाषी लेखिका हैं जिनकी कहानियाँ महिला–उत्पीड़न के विरूद्ध आवाज बुलंद करती हैं। कैमरून के मॉन्गो बेती फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिनकी कहानियाँ अपने देश के समाज और राजनीति का यथार्थ और आलोचनात्मक चित्रण करती हैं। उनकी प्रमुख कहानी है–'सैन्स हाएने सैन्स अमोर'। जे. एम. कोएत्जी साउथ अफ्रीका के प्रसिद्ध लेखक(अंग्रेजी) हैं जिन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। उनकी प्रमुख कहानी है 'द ओल्ड वूमैन एंड द कैट्स'। मोजाम्बीक के पुर्तगाली भाषी लेखक मिआ काउतो ने जादुई यथार्थवाद से प्रेरित होकर अनेक कहानियाँ लिखीं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'कोंतोस दो नासेर दा तेर्रा' और 'वोजेस अनोइतेसिदास'।त्सित्सी दंगारेंब्गा जिम्बाब्वे की अंग्रेजी–भाषी कथा–लेखिका हैं जिनकी प्रसिद्ध कहानी है 'द लेटर्स'। आसिया द्जेबार अल्जीरिआ की फ्रेंच–भाषी लेखिका हैं जो अपने स्त्रीवादी सरोकारों के लिये जानी जाती हैं। उनकी प्रमुख कहानी है– 'फेमेस दे अल्जेर डैन्स ल्योर अपार्तेमेंते'। बुची एमेचेता नाईजीरिया की लेखिका हैं जिन्होंनें अपनी कहानियों में बच्चों की गुलामी, स्त्री–मुक्ति और अफ्रीका की गरीबी का मार्मिक चित्रण किया है। 'इन द डिच' अंग्रेजी में लिखा गया उनका प्रसिद्ध संग्रह है। डैनियल ओ. फगुन्वा नाईजीरियन कहानीकार हैं जिन्होंने देशज योरूबा भाषा में विश्व–प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। नूरूद्दीन फरह सोमालिया के प्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंनें सोमाली और अंग्रेजी दोनो ही भाषाओं में कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है–'यंगथिंग'। नडीन गॉर्डिमर साउथ अफ्रीका की प्रसिद्ध अंग्रेजी–भाषी लेखिका हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं–'जंप एण्ड अदर स्टोरीज', 'लूट' आदि। साउथ अफ्रीका के ही एक महत्वपूर्ण कहानीकार हैं एलेक्स ला गुमा। इनकी कहानियों में शैली की विविधता, खास किस्म के दुर्लभ वार्तालाप और शोषित एवं प्रताड़ित जनता का यथार्थ और सहानुभूतिपूर्ण चित्रण मिलता है। अंग्रेजी में 'ए वॉक इन नाईट एण्ड अदर स्टोरीज' उनका महत्वपूर्ण संग्रह है। बेसी हेड बोत्स्वाना की महत्वपूर्ण कहानी लेखिका रहीं। उन्होंने साधारणजन को केंद्र में रखकर कई कहानियाँ लिखीं। अंग्रेजी में उनका महत्वपूर्ण संग्रह है–'द कलेक्टर ऑव ट्रेजर्स'। मोजेज इसेगावा युगांडा के महत्वपूर्ण कहानी लेखक हैं। उन्होंने युगांडा की राजनीतिक उथल–पुथल के बीच वहाँ की जनता के जीवन के संघर्षों का चित्रण अपनी कहानियों में किया है। ताहर बेन जेलौन मोरोक्को के फ्रेंच भाषी कहनीकार हैं। उन्होंने उत्तरी अफ्रीका के कठोर और संघर्षमय जीवन का चित्रण करते हुए कई मार्मिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी है–'ला वाईपेरे ब्लूयू'। हमीदौ काहने सेनेगल के फ्रेंच भाषी कहानीकार हैं जिन्होंने पश्चिमी और अफ्रीकी संस्कृतियों की अंतर्क्रियाओं को केंद्र बनाकर कहानियों की रचना की है। मोहम्मद मौलेसेहौल अल्जीरिया के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिन्होंने सैनिक तानाशाही के सेंसर से बचने के लिये यास्मीना खादरा के स्त्रीवाची छद्मनाम से कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'हौरिया'। कामारा लाए गिनी के फ्रेंच भाषी कहानीकार हैं, जिनकी प्रसिद्ध कहानी है–'लेस यूक्स दे ला स्तेचू'। नजीब महफूज मिस्र के महत्वपूर्ण अरबी भाषी कहानीकार हैं जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मनित किया जा चुका है। उन्होंने अस्तित्ववादी विषयों पर कहानियों की रचना की है औए उनकी बहुत सी कहानियों पर फिल्मों का निर्माण हो चुका है। निरूसंदेह नजीब महफूज विश्व के बहुपठित अरबी लेखक हैं। उनकी

प्रसिद्ध कहानी का 'द नॉरवेजियन रैट' नाम से अंग्रेजी में अनुवाद हो चुका है। चार्लस मांगुआ केन्या के अंग्रेजी भाषी कहानीकार हैं जिनकी कहानियाँ शहरों के साधारण जनों की गरीबी और उससे उत्पन्न कठोर जीवन–स्थितियों का वर्णन करती हैं। साराह लादिपो मान्यिका नाईजीरिया की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कई प्रसिद्ध कहानियाँ लिखी हैं। उनके महत्वपूर्ण कहानियाँ हैं– 'मि. वॉन्डर', 'मॉड्यूप', 'गर्लफ्रेंड' आदि। दमबूद्जो मारेचेरा जिम्बाब्वे के कहानीकार हैं जिन्होंने अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। 'द हाउस ऑव हंगर' उनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है। दलेने मात्थी साउथ अफ्रीका की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिन्होंने देशज अफ्रीकान्स भाषा में कहानियाँ रची है। उनका प्रसिद्ध संग्रह है– 'डाई जूडासबोक'। टॉमस मोफोलो साउथ अफ्रीका के कहानीकार हैं जिन्होंने देशज सेसोथो भाषा में मार्मिक कहानियाँ लिखी हैं। केन्या के मेजा म्वांगी एक महत्वपूर्ण कहानीकार हैं जिन्होंने अंग्रेजी भाषा में कहानियाँ लिखीं हैं। साउथ अफ्रीका के एक अन्य लेखक हैं लीविस न्कोसी जिन्होनें अंग्रेजी में कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'द होल्ड अप'। न्नेदी ओकोराफोर नाईजीरिया की प्रसिद्ध लेखिका हैं जिनकी अंग्रेजी में लिखी कहानी 'एंफिबियस ग्रीन' काफी चर्चित रही। उत्तर–आधुनिक और उत्तर–औपनिवेशिक परंपरा में बेन ओकरी नाईजीरिया के प्रसिद्ध कहानीकार हैं जिनकी तुलना अक्सर भारतीय प्रवासी लेखक सलमान रूश्दी और लैटिन अमेरिकी लेखक गैबरियल गार्शिया मार्खेज से की जाती है। 'टेल्स ऑव फ्रीडम' उनका प्रसिद्ध संग्रह है। याम्बो औओलोग्यूएम माली के लेखक हैं जिनका फ्रेंच भाषा में कहानी–संग्रह 'लेस मिले एत उने बाईब्लेस दू सेक्से' प्रकाशित है जिसे अश्लीलता के आरोप में सेंसर किया गया था। एलन पैटन साउथ अफ्रीका के विश्वप्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंने नस्लवाद का विरोध करते हुए कहानियाँ लिखी हैं। अंग्रेजी में उनका प्रसिद्ध संग्रह है–'टेल्स फ्रॉम ए ट्रबुल्ड लैंड'। बेंजामिन सेहने रवांडा के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिन्होंने अपने देश में बड़े पैमाने पर हुई जनहत्याओं को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। उनकी एक प्रसिद्ध कहानी का अंग्रेजी में 'डेड गर्ल वाकिंग' नाम से अनुवाद हुआ है। ओस्मान सेम्बेने सेनेगल के फ्रेंच भाषी लेखक हैं जिनका प्रसिद्ध कहानी संग्रह है–'वोल्तैक्यू'। नाईजीरिया के नोबल पुरस्कार प्राप्त लेखक वोल सोयिंका ने अपने लेखन के शुरुआती दौर में कुछ कहानियाँ लिखीं। अंग्रेजी में लिखी गयी उनकी कहानी 'केफीज बर्थदे ट्रीट' काफी चर्चित रही। न्गुगी वा थ्योंगो केन्या के विश्वप्रसिद्ध लेखक हैं जिन्होंने पहले अंग्रेजी और बाद में देशज गिकुयू और स्वाहिली भाषा में लिखा। उन्हें उत्तर–औपनिवेशिक लेखन के लिये हमेशा याद किया जायेगा। उनके प्रमुख कहानी–संग्रह हैं–'मिनट्स ऑव ग्लोरी', 'द रिटर्न' आदि। याईवोने वेरा जिमबाब्वे की प्रसिद्ध लेखिका हैं। अंग्रेजी में लिखी उनकी कहानियाँ काव्यात्मक गद्य, और दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त स्त्री–चरित्रों के लिये जानी जाती हैं। उनका प्रसिद्ध कहानी–संग्रह है–'व्हाई डोंट यू कार्व अदर एनिमल्स'। बिर्हानू जेरीहून इथोपिया के प्रसिद्द लेखक हैं जिन्होंनें देशज अम्हारी भाषा में कहानियाँ लिखी हैं। उनका प्रसिद्ध संग्रह है–' बिर्र अम्बार सेब्बेरेल्लिवो'।

12.4 सारांश

एम. ए. (हिंदी) के द्वितीय वर्ष से संबंधित मॉड्यूल के पाठ्यक्रम 'कहानीः स्वरूप और विकास' से संबद्ध तीसरे खण्ड की बारहवीं इकाई का अध्ययन आपने किया है। यह लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी देशों में कहानी के विकास पर प्रकाश डालने वाली इकाई है।

इकाई–12 के इस पाठ में हमने लैटिन अमेरिका और अफ्रीका के विभिन्न देशों में कहानी के विकास पर चर्चा करते हुए इन देशों के प्रमुख कहानीकारों का भी जिक्र किया है। हमने इन देशों के कहानीकारों और यूरोपीय कहानीकारों की कथा–दृष्टि के बीच के अंतर को यहाँ रेखांकित किया है। हमने यह भी देखा कि इन देशों में कहानी के विकास पर वहाँ के स्वतंत्रता संग्राम का सीधा असर पड़ा है। कहानी औपनिवशिकता को सशक्त चुनौती देते हए विकसित हुई है। लैटिन अमेरिकी देशों नें कहानी के लिये देशज भाषाओं के साथ साथ स्पहानी और पुर्तगाली भाषाओं को अपनाया तथा अफ्रीकी देशों ने स्थानीय भाषाओं के साथ–साथ अंग्रेजी, फ्रेंच और पुर्तगाली आदि भाषाओं को अपनाया। लैटिन अमेरिकी देशों की कहानियों को जादुई यथार्थवाद के कुशल इस्तेमाल के चलते विश्व भर में प्रसिद्धि मिली। बाद में बहुत से लैटिन अमेरिकी कहानीकारों नें जादुई यथार्थवाद से इतर शैली अपनाते हुए भी महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखीं। हमने प्रमुख लैटिन अमेरिकी कहानीकारों के अवदान पर भी चर्चा की है। अफ्रीकी देशों की कहानियों पर चर्चा करते हुए हमने पाया कि अफ्रीकी लेखकों की प्रमुख विशेषता है अपने यूरोपीय औपनिवेशिक सत्ताधीशों की भाषाओं को अपनी स्थानीयता में इस कदर स्वांगीकृत करना कि यही भाषाएं यूरोपीय उपनिवेशवाद का विरोध करने का सशक्त माध्यम बनती हैं और उत्तर–औपनिवेशिक अफ्रीकी कहानी की प्रमुख भाषायें बन जाती हैं। साथ ही अफ्रीकी कहानीकार स्थानीय गिकियू , स्वाहिली आदि भाषाओं में भी कहानियाँ लिखते हैं। यानी अफ्रीकी कहानी की सबसे बड़ी विशेषता है कि उसमें स्थानीयता और देशजता की रक्षा हर कीमत पर की गयी है। यह अफ्रीकी कहानीकारों का विश्वस्तर पर कहानी के विकास में दिया गया योगदान है। प्रमुख अफ्रीकी कहानीकारों और उनकी कहानियों से भी आप परिचित हो चुके/चुकी हैं।

अभ्यास

1. लैटिन अमेरिकी देशों में कहानी के विकास पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिये।
2. जादुई यथार्थवाद से आप क्या समझते हैं?
3. अफ्रीकी कहानी की विशेषताओं को रेखांकित कीजिये।
4. नोबल पुरस्कार प्राप्त लैटिन अमेरिकी और अफ्रीकी कहानीकारों पर टिप्पणी कीजिये।